ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

शोध नैतिकता
Research Ethics

Paper Submission: 04/03/2021, Date of Acceptance: 15/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

शेखर मैदमवार
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र
शा. महाविद्यालय, घट्टिया
उज्जैन (म.प्र) भारत

सारांश

रिसर्च एथिक्स नैतिकता का एक ऐसा क्षेत्र है जो वैज्ञानिक सिद्धांतो को लागू करने के लिए काम करता है। सामान्य तौर पर नैतिकता का क्षेत्र आमतौर पर इस बात से संबंधित होता है कि क्या सही है और क्या गलत है।

Research ethics is an area of ethics that works to apply scientific principles. In general, the field of ethics is usually concerned with what is right and what is wrong.

मुख्य शब्द : अनुसंधान नैतिकता ,लोकाचार, आचार, रवैया, भ्रम।
Research Ethics, Ethos, Ethics, Attitude, Confusion.

प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते है कि ''अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत विश्लेषण करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा या समाधान करने की कोशिश की जाती है।''

अनुसंधान या शोध को यदि हम परिमार्जित करना चाहे तो हम कह सकते है कि Following the pathways show by the predecessor (Earlier Researcher) and going further (Adding someting new existing) जो हमारे पहले शोधकर्ता थे उन्होंने हमें जो रास्ता दिखाया उसको फॉलो करना या फिर कुछ नया करना।

हम यू भी कह सकते है कि Testing the relevance of existing theory (challenging the existing pathways) या फिर जिस सिद्धान्त पर सारी दुनिया चली आ रही है और हमारे मन में यह आया कि यह गलत है उसे चेंलेज करना है कि यह ठीक भी है या नहीं।

उद्देश्य

शोध की नैतिकता सदैव ही संदेह से परे होनी चाहिये। शोध में नैतिकता और सत्य के प्रति निष्ठा आवश्यक है। किसी दूसरे की भाषा, विचार, उपाय, शैली का अधिकांशतः नकल करते हुये अपनी मौलिक कृति के रूप में प्रकाशित करना साहित्यिक चोरी है। इस अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य यही है कि अकादमिक सत्य, निष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम के लिये बनाए गए कानून को प्रत्येक शोधार्थी एवं शिक्षक को समझना चाहिये।

जैसे सारी दुनिया में कहा जाता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घुमती है और अपने अंक्ष पर भी घुमती है। यह सबसे पहले किसने बताया तो सब कहेंगे कॉपर निकस ने अब कॉपर निकस दुनिया में कब आया 400–450 वर्ष पहले। लेकिन कॉपर निकस के जन्म के ठीक 1 हजार वर्ष पूर्व भारतीय महर्षियों ने यह पूरी बात बता दी थीं कि पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घुमती है और अपने अंक्ष पर भी घुमती है।

हमारे यहाँ ऐसे महान ऋषि, मुनि, महर्षि हुए है जिन्होंने दुनिया में हजारों वर्ष पूर्व कई गणनाएँ की थी और ये गणनाएँ सारी दुनिया में सत्य सिद्ध हुई। यह सब किसके द्वारा हुआ शोध के द्वारा।

नैतिकता का अर्थ

नैतिकता शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'नी' धातु से हुई है जिसका तात्पर्य मार्गदर्शन करना होता है। समाज की मान्यताओं के अनुकूल कार्य करना नैतिक माना जाता है। अन्य अर्थ में नैतिकता शब्द की व्युत्पत्ति

लैटिन भाषा के Moralis शब्द से हुई है जिसका अर्थ तौर तरीका या चाल चलन, चरित्र अथवा उचित व्यवहार है।

नैतिकता Ethics आमतौर पर इस बात से सम्बन्धित होता है कि क्या सही है और क्या गलत है ?

अर्थात् Ethics are broadly the set of rules, written and unwritten, that govern our expectations of our own and behaviour. कुछ नियम एवं गाइडलाइन होती है जो कई बार लिखित में भी होते है और कई बार लिखें हुए नहीं भी होते है जैसे चोरी करना जूर्म है या किसी पर हाथ उठाना गलत है यह तो हमारे संविधान में भी लिखा हुआ है। लेकिन यह तो कही नहीं लिखा है किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए तो Ethics वह तरीका है जो यह बताता है कि कैसे इंसान का behaviour होना चाहिए या यूं कहे कि इंसान को सामाजिक प्राणी होने के नाते कुछ सामाजिक मर्यादा का पालन करना पड़ता है। समाज की इन मर्यादाओं में सत्य, अहिंसा, परोपकार, विनम्रता, सच्चरित्र आदि अनेक गुण सम्मिलित होते हैं और यह नैतिकता (Ethics) कहलाते है।

यदि हम Research Ethics की बात करे तो Research Ethics are the moral principles which are organized concepts of good or bad manner research. मतलब ये वो Principle है, सिद्धान्त है, वो तरीके है जिससे यह पता चलता है कि आप कब एक अच्छी Research कर रहे है और कब एक गलत Research कर रहे है। Basically कोई Research अच्छी है या गलत है वो किस तरह से पता चलेगी कि उसने कितने नियम फॉलो किए है। जो Research Ethics है यह नई Set of the Rules है जो हमें यह बताते है कि Research में क्या–क्या अलाउड है और क्या–क्या नहीं अलाउड है।

Research Ethics एक तरह की Guideline है जो हमें यह बताती है कि किस तरह High Quality की Research की जाती है। हमें अपनी Research को Responsible फार्म में करने के लिए क्या Code of Conduct अपनाने होंगे, वह हमें Research से पता चलता है।

वर्तमान में कोरोना काल चल रहा है जब से प्रारम्भ हुआ तभी से कोविड–19 के संक्रमण को रोकने के लिए 175 से अधिक वैक्सीन विकास के विभिन्न चरणों से गुजर रहे है। कुछ तो बाजार में आ भी गए है और कुछ अभी भी पाईप लाईन में है इसका कारण यह भी है कि Research Ethics के अनुसार किसी भी वैक्सीन को रोल आउट करने के लिए लाइसेंस प्राप्त करने से पहले विभिन्न परीक्षणों से गुजरना होता है। जैसे वैक्सीन के लिए आपको तीन फैज से गुजरना पड़ता है फेज 1 में करीब 100 लोगों पर वैक्सीन परीक्षण किया जाता है फेज 2 में करीब 500–800 लोगों पर तथा फेज 3 में लगभग 20 से 30 हजार लोगों पर परीक्षण किया जाता है। इन्टरनेशनल कमोडिटी की यह गाइड लाइन्स है कि जब तक कोई तीनों फेज पास नहीं करेगा उसे मान्यता नहीं दी जा सकती है कि वैक्सीन सुरक्षित है उसका इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर ऐसा नहीं किया जाता तो यह Research Ethics का उल्लंघन है। इसलिए Research Ethics फॉलो करना बहुत जरूरी होता है क्योंकि वहीं बताता है कि आपकी Research कितनी उच्च क्वालिटी की है।

Research Ethics को और अच्छे से जानने के लिए हम यह कह सकते है कि Research Ethics is a set of guidelines that help Researchers to conduct research successfully.

Research Ethics हमें यह भी बताता है कि Research Process कैसे होनी चाहिए किस तरह से Data Collect करना है किस तरह से Data का Interpretation करना है किस तरह से Report Publish करना है मतलब आपको कब–कब क्या करना है और क्या नहीं करना है दोनों ही चीजें Research Ethics में बतायी जाती है जैसे हम किसी न्यूज चैनल पर न्यूज देखते है और उसमें किसी व्यक्ति की हत्या की न्यूज बतायी जा रही है तो हम देखते है कि उसकी तस्वीर को हमेशा झिलमिलाते हुए दिखाया जाता है। पूरी तस्वीर नहीं दिखाई जाती। यह गाइड लाईन के तहत किया जाता है कि कोई इंसान यह सब देखकर विचलित हो जाए। इसके मन में डर बैठ जाए या वह घबरा जाए ऐसी चीजों को अवाइड करने के लिए यह किया जाता है। यह कहां से आई यह गाइडलाईन्स है।

शोध में नैतिक दृष्टि से कई सावधानियॉ, रखी जानी चाहिए। निम्नलिखित कुछ नैतिक सिद्धान्तों का एक सामान्य सारांश इस प्रकार है –

नैतिक सिद्धान्त (Ethical Principles of Research)

ईमानदारी (Honesty)

शोधकर्ता को अनुसंधान परियोजना में ईमानदारी से और सच्ची जानकारी प्रदान करनी चाहिए। शोधकर्ता गलत बयानी, चूक या आंशिक सच्चाई से गुमराह (गलत) या छल (धोखा) नहीं करते है।

अखण्डता (Integrity)

शोध से सम्बन्धित किए गए अपने वादों एवं अनुबंधों का पालन करना चाहिए। ईमानदारी के साथ शोध कार्य करना चाहिए तथा विचारों एवं कार्यों को स्थिरता हेतु सदैव प्रयासरत रहना चाहिए।

सर्तकता (Carefulness)

शोध में की जाने वाली लापरवाही त्रुटियों एवं असावधानियों से बचना चाहिए । अपने एवं अपने सहयोगियों के कामों का समीक्षात्मक परिक्षण करना चाहिए सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया का ठीक प्रकार से रिकार्ड रखना चाहिए अर्थात् सामग्री संकलन शोध प्ररचना तथा एजेंसियों या जर्नलों से पत्राचार सुरक्षित रखना चाहिए। इससे शोध में सर्तकता (Carefulness) बनी रहती है।

खुलापन (Openness)

सामग्री, परिणामों, विचारों, यंत्रो (प्रविधियों), संसाधनों को अन्य लोगों के साथ साझा करके शोध में खुलापन (Openness) बनाए रखना चाहिए। साथ ही शोधकर्ता को अपनी आलोचना एवं नवीन विचारों हेतु तैयार रहना चाहिए।

बौद्धिक सम्पदा का सम्मान (IPR)

शोधकर्ता को लाइसेंस (पेटेण्ट) एवं सर्वाधिकार (कॉपीराइट) का आदर करना चाहिए। बिना अनुमति के अप्रकाशित सामग्री पद्धतियों अथवा परिणामों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अन्य विद्वानों की शोध में प्रयुक्त सामग्री को सदैव आदर सहित अभिस्वीकृति दी जानी चाहिए तथा सामग्री को दूसरों के ग्रन्थों से चोरी नहीं करना चाहिए।

गोपनीयता (Confidentiality)

शोधकर्ता को प्रकाशित कराने अथवा ग्राण्ट प्राप्ति हेतु भेजे गए शोधपत्रों, व्यक्तिगत रिकॉर्ड, व्यापार एवं सैन्य राज (Military secrets) तथा सूचना दाताओं के रिकॉर्डो की गोपनीयता (Confidentiality) को बनाए रखना चाहिए।

उत्तरदायी प्रकाशन (Responsible Publications)

शोध का प्रकाशन केवल अपने स्वयं के कैरियर को आगे बढ़ाने के साथ–साथ ज्ञान के प्रचार–प्रसार हेतु भी किया जाना चाहिए। शोध को व्यर्थ तथा किसी रूप में बार–बार एक ही बात कहने हेतु प्रकाशित करने से बचना चाहिए। अन्य शब्दों में उत्तरदायी प्रकाशन (Responsible Publication) को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

अनुभवी परामर्शदाता (Responsible Mentoring)

शोध का प्रशिक्षण देने वाले अध्यापकों एवं विशेषज्ञों को छात्रों को शोध की बारीकियाँ समझाते समय अनुभवी परामर्शदाता (Responsible Mentoring) के रूप में कार्य करना चाहिए। उनकी भलाई का ध्यान रखना तथा उन्हें सही निर्णय लेने का प्रशिक्षण देना आवश्यक है। साथ ही अपने छात्रों एवं सहयोगियों के प्रति गैर–भेदभाव (Non-discrimination) की भावना होनी चाहिए।

सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility)

शोध द्वारा सामाजिक अच्छाई का प्रचार–प्रसार तथा सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। शोधकर्ता में अपने विषय तथा समाज के मानकों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility) होना आवश्यक है।

वस्तुतः हमारा प्रदेश हो या फिर देश, उच्च शिक्षा में शोध को लेकर हम अक्सर निराशा से भर जाते हैं। विश्वविद्यालयों में शोध के नाम पर कॉपी–पेस्ट का अक्षम्य अपराध चल रहा है इससे भला कौन अनजान है ? यही वजह है कि मौलिक शोध और इससे देश–प्रदेश को होने वाला वास्तविक लाभ नगण्य है। बस पीएच.डी. के नाम पर पोथियां तैयार की जा रही है, डॉक्टरी अलॉट की जा रही है और शोध संस्थानों में रद्दी का ढेर बड़ा और बड़ा होता जा रहा है।

शोध संस्थान यह भलीभांति जानते है कि शोध के स्तर और उसके परिणामों से ही किसी विश्वविद्यालय या संस्थान की वास्तविक पहचान बनती है। शोध से ही विषय वस्तु नए अविष्कार की खोज होती है।

किन्तु हमारे यहां शोध को लेकर न तो वैसी अभिरूचि है न ही वैसा समर्पण और व्यावहारिकता । आपको यह जानकर हैरत होगी कि पांच देशों के समूह 'ब्रिक्स में भारत ही है जहां शोध पर GDP का केवल 0.9% फीसदी खर्च किया जाता है। हमारे मुकाबले यूरोप या एशिया के अन्य देश शोध पर हमसे कहीं अधिक खर्च करते है। जैसे चीन में यह 1.9 फीसदी, रूस में 1.5 फीसदी, ब्राजील में 1.3 फीसदी तथा दक्षिण अफ्रीका में GDP का 01 फीसदी खर्च होता है। इसराइल 4.21 प्रतिशत खर्च करता है।

खर्च का यही अनुपात पीएचडी स्कॉलर की संख्या में भी दिखाई देता है। मसलन चीन के विश्वविद्यालयों से प्रतिवर्ष 22 हजार पीएच.डी. स्कॉलर निकलते हैं, जबकि भारत में यह आंकड़ा प्रतिवर्ष केवल 8000 पीएच.डी. स्कॉलर है और इन आठ हजार में से भी अधिकांश किस तरह अपनी पीएच.डी. पूरी करते है, यह किसी से छुपा नहीं है।

निष्कर्ष

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने गुड़ एकेडमिक रिसर्च प्रैक्टिस (जीएआरपी) नामक मागदर्शन दस्तावेज जारी किया जहां अकादमिक नैतिकता और अनुसंधान अखण्डता सबसे महत्वपूर्ण है। दस्तावेज को यूजीसी के गुणवत्ता जनादेश के हिस्से के रूप में तैयार किया गया है और इसमें आवश्यक सावधानियां है जो किसी भी शोधकर्ता को अनुसंधान चक्र के किसी भी चरण में कदाचार से बचने के लिए जरूरी है इसका एकमात्र उद्देश्य है हर अनुसंधानकर्ता में नैतिक मूल्य स्थापित करना और मजबूत अनुसंधान संस्कृति की नींव रखना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति अकादमिक अखण्डता की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Ania, Gruszczynska (2016), 10-Common challenges-faced-by-early-career-Researchers. Retried 29 July, 2019 from: https://www.wiley.com/network/researchers/writing-and-conducting-research/10- common-challenges-faced-by-early-careerresearchers*
2. *Kirsi Pyhältö, Auli Toom, Jenni Stubb, and Kirsti Lonka (2012), "Challenges of Becoming a Scholar: A Study of Doctoral Students' Problems and Well-Being," International Scholarly Research Network ISRN Education Volume 2012, Article ID 934941, 12 pages doi:10.5402/2012/934941, Retried 27 July, 2019 from : https://www.hindawi.com/journals/isrn/2012/934941/*
3. *INOMICS Team (2019), 10 Biggest Struggles of PhD Students. Retried 25, July, 2019 from: https://inomics.com/insight/10-biggeststruggles-of-phd-students-610514*
4. *http://aishe.nic.in/aishe/reports*
5. *https://www.isro.gov.in/chandrayaan-2home0*
6. *https://www.ugc.ac.in*